सालाना रिपोर्ट

अप्रैल 2020 से मार्च 2021

SADBHAVANA TRUST

समुदाय के बीच युवा महिलाओं एवं लड़कियों का नेतृत्व विकास

सूची

क्र.स.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	संस्था का परिचय	3
2.	नेतृत्व विकास कार्यक्रम	4–10
3.	GBV एवं महिला संगठन निर्माण	10–11
4.	क्षमता विकास और नेटर्वकिंग	12
5.	संस्थागत कार्य	13– 14
6.	कोविड–19 राहत कार्य	14– 16
7.	परिणाम	16–17
8.	उपलब्धियां	17–18
9.	चुनौतियां	18– 20
10.	सीख	20– 21
11.	सहयोगी संस्था	21
12.	सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म	22

1. संस्था का परिचयः

सद्भावना ट्रस्ट की स्थापना 1990 मे दिल्ली में स्थानीय सक्रिय कार्यकर्ताओं के एक ऐसे समूह द्वारा की गई जो जेण्डर एवं समता के सिद्धान्तों पर विश्वास करते हैं। और इस संस्था के पंजीकरण के 20 साल पहले से वे दिल्ली में वंचितों के साथ काम कर रहे थे। सद्भावना ट्रस्ट का उद्देश्य हैं, स्थानीय नेतृत्व ख़ास तौर पर महिलाओं एवं हाशिये पर खड़े समूहों का क्षमता विकास करना।

सद्भावना ट्रस्ट 2009 से लखनऊ शहर की बस्तियों में वंचितों के साथ काम कर रही हैं। संस्था खासकर लड़कियों और महिलाओं के साथ जेण्डर आधारित हिंसा और व्यक्तित्व विकास पर नज़रिया निर्माण करके उन्हें नेतृत्वकारी भूमिका में लाने का काम करती है। साथ ही लड़कियों और महिलाओं में तकनिकी कौशल का विकास करते हुए उन्हें सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनने पर ज़ोर देती है। इसी कड़ी में संस्था समुदाय में महिला हिंसा के मुद्दे पर कानूनी पैरवी एवं महिलाओं को फिर से अपनी ज़िंदगी शुरू करने में मदद करने का काम करती हैं, ताकि महिलाओं की सामाजिक कामों में भागीदारी सुनिश्चित हो और वे अपने अधिकारों के बारे में जानें।

संस्था का विज़न

वंचित समूहों की लड़कियों एवं महिलाओं का व्यक्तित्व विकास और नज़रिया निर्माण करते हुए उन्हें नेतृत्व में लाना।औरतकनिकी कौशल से जोड़कर उन्हें सशक्त करते हुए आत्मनिर्भर बनाना।

संस्था का मिशन

एक ऐसे हिंसा मुक्त सामाज का निर्माण करना, जो संवैधानिक मूल्यों पर आधारित हो, समानता, शांती, भेदभाव से मुक्त, लैंगिक हिंसा से मुक्त और न्याय पर आधारित हो, जहां पर सभी इंसान को समान अवसर प्राप्त हो। रचनात्मक तरीके से समुदाय के मुद्दों पर जागरूक करने की प्रक्रिया से जोड़ना।

2. युवा महिला एवं लड़कियों के साथ नेतृत्व विकास कार्यक्रमः

क. लड़कियों का मोहल्ला मंच–लड़कियों के साथ नेतृत्व विकास कार्यक्रम का संचालन मोहल्ला मंच के माध्यम से चल रहा हैं। यह कार्य पूर्ण रूप से पांच क्लस्टर में चल रहा हैं।

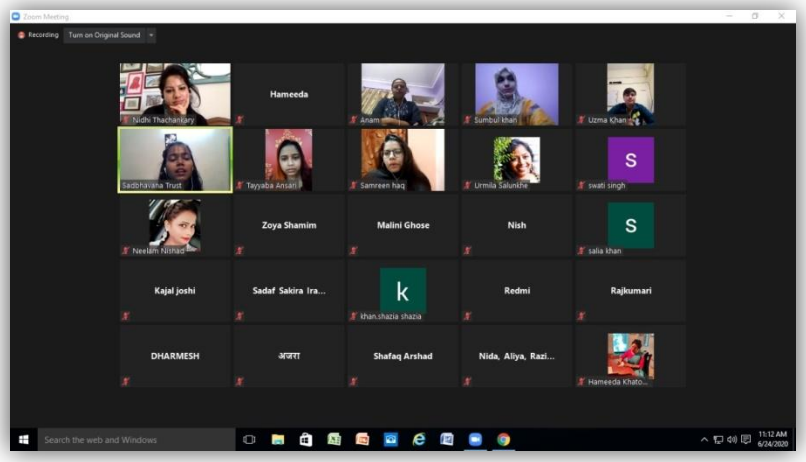

- मोहल्ला मंच में प्रत्येक मंच की लड़कियों के साथ नज़रिया निमार्ण हेतु सामाजिक मुद्दों पर ऑनलाइन–ऑफलाइनसत्र चलाया गया। जैसे–लिंगआधारित पहचान, भूमिका, कानून, भेदभाव, गतिशीलता, लिंग आधारित हिंसा।

- प्रत्येक मोहल्ला मंच के दो–दो लीडर्स (70 लड़कियों के साथ) के साथ कोविड–19 के दौरान उभरे सामाजिक मुद्दों पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम का संचालन किया गया। जैसे–कोविड–19 के सन्दर्भ में लिंग आधारित भेद–भाव, कामगार महिलाओं की स्थिति, पितृसत्ता, फेक न्यूज़ से पनपती हिंसा, गतिशीलता, शिक्षा, लड़कियों के सपने और अकांक्षाएं, कार्य एवं सार्वजनिक स्थल पर होने वाली यौन हिंसा और कानून।

- कोविड–19 से उभरे मुद्दों पर 650 लड़कियों के साथ वन टू वन सर्वे किया गया। जिसका मकसद था, खासकर लॉकडाउन के दौरान लड़कियों ने क्या महसूस किया? सबसे ज़्यादा उन्होंने किस चीज़ को लेकर संघर्ष किया? प्राथमिकता के तौर पर लड़कियों के सामने कौन से मुददें रहें जिसका सामना उन्होंने किया? इन बातों को समझने के लिए लड़कियों के बीच सामूहिक चर्चा की गई। ताकि लड़कियां स्वंय अपने मुददों को आवाज़ दे सकें, और वह सोच सकें कि ऐसी स्थिति में उन्हें क्या करना हैं? कैसे करना हैं? क्यों करना हैं? क्या सहयोग चाहिए? और किससे चाहिए?

- सर्वे के दौरान लड़कियों ने तीन अहम मुद्दे उठाये। जैसे– रोज़गार, शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य। उभरे मुद्दों पर गहरी जानकारी हासिल करने हेतु संस्था द्वारा 142 लड़कियों के साथ समूह चर्चा किया गया।

ख. सेन्टर द्वारा संचालित कार्यक्रम–सद्भावना ट्रस्ट ने समुदाय के बीच दो क्षेत्रों में (डालीगंज, गढ़ीकनौरा) संचालित **"नज़रिया लीडरशिप सेन्टर"** में रूके कार्यक्रमों को पूरा करने पर ज़ोर दिया, क्योकि कोविड–19 के दौरान सेन्टर कार्यक्रम के संचालन में विलम्ब हो गया था।

- सेन्टर कार्यक्रम से कुल 235 लड़कियां प्रत्यक्ष रूप से (डालीगंज 87 और गढ़कनौरा में 148) नियमित रूप सेहोने वाली रचनात्मक (ऑनलाइन–ऑफलाइन कार्यक्रम) गतिविधियों से जुड़ी रही हैं।
- सेन्टर से 50 लड़कियों ने **नेतृत्व विकास कार्यक्रम** के तहत ठोस रूप से (डालीगंज और गढ़ीकनौरा सेन्टर) निम्न कौशल (ऑनलाइन–ऑफलाइन कार्यक्रम) सीखे। जैसे– कम्प्यूटर का बेसिक कोर्स, फोटोग्राफी, डिजिटल स्टोरी, वाट्सएप्प फॉरवर्ड, इंग्लिश कोर्स, जॉब मार्केट एक्पोजर विज़िट, करियर काउंसलिंग, व्यक्तित्व विकास, नये पीढ़ी के कौशल सोशल मीडिया, इंटरव्यू स्किल्स, नज़रिया

आधारित सामाजिक मुद्दें पर जागरूकता, सी0वी0 लेखन, बैंक संबंधित जानकारी, चिन्हित मुद्दों पर मोहल्ला अभियान, 2 माह का इर्न्टनशिप प्रोग्राम और समुदायिक कार्यक्रम का आयोजन।

- सेन्टर कोर्स से जुड़ी लड़कियों ने कोविड –19 महामारी के दौरान स्वयं के मोहल्लों में ज़रूरतमंद परिवारों का सर्वे किया और उनको संस्था व स्थानीय स्टेक होल्डरों की मदद से राहत सामग्री पहुंचाई।
- डालीगंज और गढ़ीकनौरा सेन्टर कार्यक्रम के अंत में लड़कियों को प्रमाण पत्र वितरण करके उनको प्रोत्साहित किया गया।
- सेन्टर की उपयोगिता और महत्व को समझने के लिए मोहल्ला मंच की लगभग 54 लड़कियों के साथ समूह चर्चा किया गया। उनसे पूछा गया कि मोहल्ले में सेन्टर की क्या ज़रूरत है? वह सेन्टर का उपयोग खुद के लिए और अन्य लड़कियों के लिए कैसे देख रही हैं? कोविड–19 के प्रभाव को देखते हुये सेन्टर उनके लिए कैसे फायदेमंद हो सकता हैं? चर्चा के माध्यम से लड़कियों ने सेन्टर की उपयोगिता और लाभ बतायें, जो उनके और समुदाय दोनों के लिए भविष्य में लाभदायक होगा।

- फील्ड कार्यकर्ताओं के साथ लीडरशिप सेन्टर के अनुभव एवं नये जगहों पर सेन्टर स्थापित करने हेतु सुझाव पर चर्चा की गई। जिसके तहत संचालित सेन्टर से मिली सीख और चुनौतियों पर गहराई से बात की गई। साथ ही उनसे नये क्षेत्रों में लीडरशिप सेन्टर को स्थापित करने हेतु विज़न, मिशन और लक्ष्य पर सुझाव लिये गये।

- नेतृत्व विकास कार्यक्रम, नये बैच के साथ अक्टूबर माह से संचालित हो गया हैं। जिसके लिए समुदाय से हमारे पास 70 लड़कियों का आवेदन आया। उनमें से 50 लड़कियों का इन्टरव्यू किया गया। वर्तमान में (अकबर नगर, राधाग्राम और डालीगंज) कुल 30 लड़कियां कार्यक्रम से जुड़ी हुई हैं। यह कार्यक्रम क्षेत्र के बीच ऑनलाइन और ऑफलाइन चलाया जा रहा हैं।

- नये बैच के साथ नज़रिया निर्माण, इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स, सोशल मीडिया, कम्प्यूटर क्लास, बैकिंग की डिजिटल जानकारी, समुदाय के बीच उभरे मुद्दों पर अभियान चल रहे हैं।

ग. एडवांस लीडरशिप प्रोग्राम–यह कार्यक्रम जुलाई माह 2020 से नये बैच के साथ संचालित किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 15 लड़कियां जुड़ी हुई हैं, जिनके साथ काफी दिलचस्प कार्यशालाएं आयोजित की जा रही हैं। इस कार्यक्रम में 5 क्षेत्रों से ऐसी लड़कियों को चिन्हित किया गया, जो सद्भावना ट्रस्ट के लीडरशिप के बेसिक प्रोग्राम से जुड़ी थी। कार्यक्रम में जुड़ने हेतु विज्ञापन निकाला गया जिसके उपरान्त 34 लड़कियों ने एडवांस कार्यक्रम में जुड़ने हेतु आवेदन किया। 25 लड़कियों का फेस टू फेस इन्टरव्यू करने के बाद 15 लड़कियां पूर्ण रूप से कार्यक्रम में जुड़ी हैं।

- एडवांस कोर्स के तहत लड़कियां 15 दिन का समय अनुबंध नियम के हिसाब से कार्यक्रम को देती हैं। जिसमें वह 10 दिन में कार्यशालाएं ग्रहण करती हैं और पांच दिन का समुदाय कार्य करती हैं।
- एडवांस कोर्स के तहत बाहरी सन्दर्भ व्यक्ति द्वारा कई कार्यशालाएं चलाई जा रही हैं। जैसे–कोविड–19 के सन्दर्भ को समझना, जेण्डर– भेदभाव, पहचान आधारित हिंसा, कानून, बड़े पैमाने पर हो रही हिंसा, अभिव्यक्ति के तरीके, सोशल मीडिया की खूबी और खामिया, मौजूदा सन्दर्भ में प्रस्तावित कानून पर समझ, तकनिकी जानकारी और कोविड–19 के दौरान उभरे मुद्दे पर विचार विमर्श एवं समुदाय के बीच अभियान का संचालन।

घ. युवा नेटवर्किंग एवं अभियान कार्यक्रम– पिछले एक साल में संस्था द्वारा युवा नेटवर्किंग हेतु कोविड–19 के दौरान उभरे विशेष मुद्दों पर समुदाय के बीच कई ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिसका संक्षेप में विवरण नीचे दिया गया हैं।

अभियान–1 (कोविड–19 के दौरान उभरी महिला हिंसा)

तोड़ी बंदिशें: हिंसा के ख़िलाफ हमारी आवाज़– समुदाय की नेत्रियों ने संस्था के सहयोग से समुदाय की स्थिति को देखते हुये फैसला लिया कि वे 16 दिवसीय अभियान में कोविड –19 में उभरे महिला हिंसा के मुद्दे पर आवाज़ उठायेंगी। नेत्रियों ने तकरीबन 10 क्षेत्रों में समुदाय के बीच लिंग आधारित हिंसा पर कई रूचिकर गतिविधियां चलाई, जैसे– पोस्टर मेकिंग, फिल्म फेस्टिवल, रोल प्ले, डिबेट,

हस्ताक्षर अभियान, सड़क पर स्लोगन राईटिंग और छोटे समूह के साथ चर्चा। यह कार्यक्रम लगातार ऑनलाइन ऑफलाइन चलता रहा। कार्यक्रम के ज़रिये 550 महिला एवं किशोरियों तक पहुंच बनी।

अभियान समापन कार्यक्रम–तोड़ी बंदिशें: हिंसा के ख़िलाफ हमारी आवाज़ अभियान का समापन करने हेतु सद्भावना ट्रस्ट ने अपने सहयोगी संस्थाओं के साझे प्रयास से मानव अधिकार दिवस के अवसर पर यह समारोह का आयोजन किया। कोविड –19 महामारी को ध्याान में रखते हुये यह कार्यक्रम जूम वेबिनार के ज़रिये किया गया। कार्यक्रम में लगभग 100 से ज़्यादा युवा महिलाएं एंव पुरूष शामिल हुये।

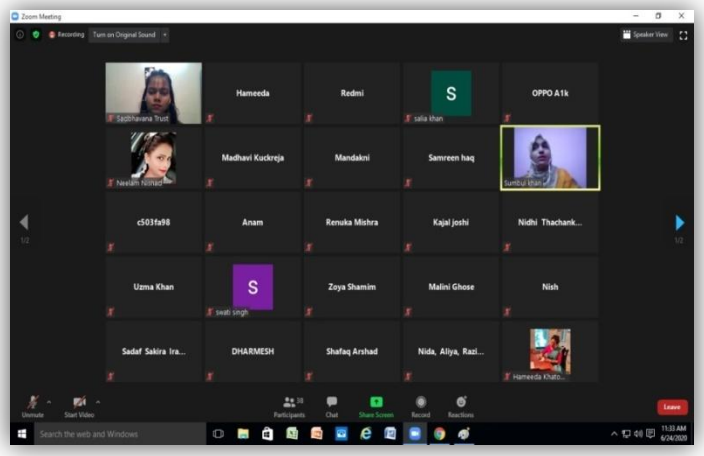

जूम वेबिनार कार्यक्रम में सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में **हर्षिता आहूजा, सबिका अब्बास नक़वी, ऋृचा रस्तोगी, यासमीन, अज़रा और हर्षिता गुप्ता** मौजूद रही। वक्ताओं द्वारा बीते 9 माह में कोरोना महामारी के भीषण काल में बढ़ती लैंगिक हिंसा पर चर्चा किया गया और प्रेरणा दायक संदेश से युवा महिलाओं को प्रोत्साहित किया गया।

अभियान 2– (कोविड –19 में हुई शादियों का युवा महिलाओं पर असर)

उद्देश्य–समुदाय से उभरी युवा नेत्रियों द्वारा खासकर यह समझना कि शहरबंदी के दौरान कोरोना संकट में की जाने वाली शादियों से लड़कियां क्या समझ रही हैं? शादी के निणर्य से उनकी पढ़ाई या नौकरी पर क्या असर पड़ा? उनके क्या सपने/ख्वाहिशें हैं? शादी के बाद सबसे ज़्यादा उन्होंने किस चीज़ को लेकर संघर्ष किया? कोविड में हुई शादियों से लड़कियों की ज़िन्दगी में क्या बदलाव आया हैं? इसके साथ ही लड़कियों के बीच शादी से प्रभावित हुये हर पहलुओं पर चर्चा करना। जिससे लड़कियां स्वंय अपने मुददों को पहचान सकें, और वह सोच सकें कि ऐसी स्थिति के लिए उन्हें खुद को कैसे तैयार करना हैं।

अभियान की रणनीति–

- कोविड–19 में जिन लड़कियों की शादी हुई (143 लड़कियों से) हैं उनसे उनकी शादीशुदा जिन्दगी पर गहरी चर्चा करना।
- शादी के मुद्दे पर हुई चर्चा के मुख्य पहलुओं को आकड़े के रूप में ऑनलाइन (पोस्टर, पॉडकास्ट, वीडियो के ज़रिये) प्रस्तुत करना।

- 5 क्षेत्रों में (बांसमंडी, राधाग्राम, डालीगंज, गढ़ीकनौरा, अकबरनगर) "खेल–खेल में" युवा मेला का आयोजन करना। जिसके तहत युवाओं के साथ कोविड–19 से उभरे मुद्दों पर चर्चा करना और उनकी समझ बनाना।
- महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन करना, जिसके तहत युवा महिलाओं द्वारा पैनल डिस्कशन, अभियान का समापन, अभियान से जुड़े अनुभव की शेयरिंग, शास्त्रीय नृत्य और मनोरंजक खेलों के ज़रिये युवाओं के साथ चर्चा करके उन्हें जागरूक करना।

महिला दिवस के अवसर पर किये गये समुदाय कार्यक्रम का विवरण–

संस्था द्वारा दिनांक 5 मार्च से 8 मार्च 2021 तक समुदाय की युवा महिलाओं के साथ महिला दिवस समारोह एवं तोड़ी बंदिशेंः कोविड में शादियां अभियान का समापन कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम लगातार 4 क्षेत्रों (राधाग्राम, डालीगंज, अकबरनगर, गढ़ी कनौरा) में संचालित किया गया। कोविड –19 महामारी के नियमों को ध्यान में रखते हुये कार्यक्रम को समुदाय के बीच (कोविड–19 के नियमों का पालन करते हुये बंद जगह पर) आयोजित किया गया। जिसमें संस्था के कार्यक्रम से जुड़ी प्रत्येक क्षेत्र से लगभग 120 युवा महिलाएं (प्रत्येक क्षेत्र से कुल 500 युवा महिलाएं)जुड़ी। प्रत्येक क्षेत्र में अलग–2 सन्दर्भ व्यक्ति कार्यक्रम में जुड़े और उन्होंने युवा महिलाओं और किशोरियों को अपनी आकर्षित बातों से प्रेरित किया।

कार्यक्रमके दौरान क्षेत्रिय स्टेक होल्डरों द्वारा महिला की गतिशीलता और हर कामों में उनकी भागीदारी को सराहते हुये उन्हें जीवन में आगे बढ़ने की शुभकामनाएं दी गई। समुदाय की युवा महिलाओं द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया, किशोरियों द्वारा कविता पढ़ी गई। समुदाय से उभरी नेत्रियों द्वारा कोविड संकट काल में हुई शादियों का लड़कियों के जीवन पर पड़े कुप्रभाव का अनुभव साझा किया गया। जिसके ज़रिये उन्होंने समुदाय की चिन्हित कहानियों का सारांश पेश किया। साथ ही महिला मुद्दों पर आधारित रूचिकर खेल के माध्यम से लड़कियों के सपने, शिक्षा, नौकरी, स्वास्थ्य और शादी में दिये जाने वाले उपहार के बारे में गहरी चर्चा करके प्रतिभागियों को जागरूक करने का प्रयास किया। इसी दौरान नेतृत्व विकास कार्यक्रम से जुड़ी लड़कियों द्वारा कार्टून पोस्टर और उनके द्वारा खीची गई फोटो की प्रर्दशनी लगाई गई। जिसके ज़रिये उपस्थित लोगों को लड़कियों के काम और उनके तकनिकी हुनर देखने को मिले।

महिला दिवस के अवसर पर 'खेल–खेल में नज़रिया बदलो' कार्यक्रम के तहत महिलाओं और लड़कियों के साथ रूचिकर खेल खिलाएं गये। खेल 5 मुद्दे पर आधारित था, जैसे– शिक्षा, रोज़गार, ख्वाहिशें, महिला स्वास्थ्य, दहेज उत्पीड़न व महिला हिंसा। यह खेल एडवांस कोर्स से जुड़ी लड़कियों ने स्वयं तैयार किया, जिसके ज़रिये उन्होंने कोविड– 19 में महिलाओं से जुड़े मुद्दों को सम्बोधित किया। खेल कुछ इस प्रकार के रहें जैसे– तस्वीर का तसव्वुर, गोलमाल, हम आपके हैं कौन, पूंछ लगाओं जीनियस कहलाओं, कुर्सी दौड़, हमसे हो तुम हमें पहचानों, जो जीता वही सिकंदर, सेहत का राज़, ज़िंदगी से रूबरू, तोलमोल, कुबूल हैं? और जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा। क्षेत्रिय कार्यक्रम महिलाओं और किशोरियों के लिए बहुत ही उत्साह पूर्ण साबित हुआ। क्योंकि कोविड –19 के संकट काल का ये पहला मौका था जिसे महिलाओं ने एक जश्न की तरह मनाया।

प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम–सद्भावना ट्रस्ट ने कोरोना महामारी की स्थिति को देखते हुये **"नेतृत्व विकासकार्यक्रम"** के सर्टिफिकेशन कार्यक्रम का आयोजन दो क्षेत्रों में किया। कोविड–19 नियमों का पालन करते हुये यह कार्यक्रम कम लोगों के बीच समुदाय में किया गया। कार्यक्रम में लगभग 50 युवा लड़कियाँ एवं महिलाएं शामिल हुईं। कार्यकम से जुड़ी लड़कियों द्वारा शॉट फिल्म, डांस और पैनल डिस्कशन किया गया। जिसमें उन्होंने कार्यक्रम से सीखे अनुभव को सबसे साझा किया।

3. GBV एवं महिला संगठन निर्माण कार्यः

क.पिछले एक वर्ष के दौरान संस्था द्वारा 42 केसों में महिला के निणर्य अनुसार पैरवी की गई है।**जैसे–** काउन्सलिंग करना, इकरारनामा करना, प्रशासन द्वारा सहयोग दिलाना, एफ0आई0आर0, एन0सी0आर0(इनमें 20 केस कोविड–19 के दौरान पंजीकृत हुये हैं) करवाना एवं लॉकडाउन के दौरान उनसे सम्पर्क बनाये

रखते हुऐ उनको राहत सामग्री एवं उनके बच्चों की शिक्षा में सहयोग देना। पिछले साल के पुराने 16 महिलाओं के केस कोर्ट तक पहुंचाकर पैरवी करने का कार्य किया गया (इनमें से 6 केस कोविड–19 के कारण लंबित है)। लगभग 25 संर्घषशील महिलाओं के साथ मीटिगं करके उनका **तोड़ी बंदिशें** नाम से वाट्सएप्प ग्रुप स्थापित किया गया। जिसके माध्यम से महिलाओं के बीच महिला मुद्दों पर बात करना सहज हो गया हैं।

उपरोक्त कोर्ट केस में दो युवा महिलाओं का केस अन्य ज़िले का हैं जिसका संक्षेप विवरण नीचे प्रस्तुत हैं।
बिटिया केस 1–कोरोना महामारी की वजह से महिला का केस लंबित है। संस्था द्वारा युवा महिला को उसकी पढ़ाई में सहयोग किया जा रहा हैं, वर्तमान में महिला बीए थर्ड ईयर की पढ़ाई कर रही है।
बिटिया केस 2–वर्तमान में युवा महिला भोपाल के मानसरोवर नर्सिंग कॉलेज में नर्सिंग का कोर्स कर रही हैं, इस साल कोर्स का आखरी साल है। संस्था द्वारा महिला की पढ़ाई और उसके केस में कानूनी पैरवी के लिए सहयोग किया जा रहा हैं, परन्तु इस दौरान कोरोना महामारी के कारण इनका भी केस लंबित है। वर्तमान में युवा महिला ऑनलाइन पढ़ाई कर रही हैं।

ख. GBV के मुद्दे पर क्षमता विकास– कोरोना महामारी के दौरान सप्ताह में एक दिन GBV के मुद्दे पर ऑनलाइन सत्रों का संचालन किया गया। क्षमता निमार्ण कार्यशाला से कार्यकर्ता और समुदाय के लीडर्स जो भी पहल समुदाय में कर रही हैं उसका आंकलन करके उन्हें हिंसा से जुड़े अन्य केसों में पैरवी करने का मौका दिया गया। जिससे वे लगातार केस पैरवी में सक्रिय रूप से सहभागिता कर रही हैं।

ग. महिला संगठन का निर्माण–संस्था द्वारा प्रत्येक क्षेत्र मेंमहिलाओं का संगठन तैयार किया गया हैं। संगठन के माध्यम से महिलाओं के साथ प्रति माह नज़रिया निर्माण (छोटे समूह में) हेतु सत्र का संचालन किया गया। जैसे जेण्डर, पितृसत्ता, काम का बटवारा, स्वास्थ्य और मौलिक अधिकार। गतिविधियों में चर्चा किये गये मुद्दों पर महिलाओं की समझ बनी और वह स्वयं अपनी बेटी और बहु के लिए सहयोगी के रूप में उभर कर सामने आईं हैं।

घ. सूचना डेस्क–महिला संगठन की महिलाओं के बीच सूचना डेस्क का आयोजन किया गया, जिसमें वर्तमान (कोविड–19 के दौरान सरकार द्वारा दी जाने वाली राहत की सही जानकारी) संचालित सरकारी योजनाओं एवं कानूनी दस्तावेज़ बनाने पर ज़ोर दिया गया। जैसे– समुदाय को राशन प्राप्त कराने में मदद, जन–धन योजना का लाभ और उज्जवला योजना का लाभ दिलाने में मदद किया गया।

ड़. प्रशासनिक सम्पर्क– ख़ासकर कोविड–19 के दौरान कार्य क्षेत्र के स्कूलों, स्टेक होल्डरों और पुलिस प्रशासन से प्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क हुआ हैं। और इसी सम्पर्क के माध्यम से हम समुदाय को राहत सामग्री देने में सफल रहें। वर्तमान में समुदाय की नेत्रियों का जुड़ाव स्थानीय स्टेकहोल्डरों के साथ मज़बूत हुआ हैं।

4. क्षमता विकास और नेटवर्किंगः

क. नेटवर्क समूह से जुड़ाव–पिछले एक वर्ष में उत्तर प्रदेश स्तर, राष्ट्रीय स्तर और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अन्य संस्थाओं द्वारा संचालित ऑनलाइन कार्यशाओं में संस्था के साथियों की सक्रिय भागीदारी रही हैं। जैसे– समा संस्था, महिला अधिकार समूह, रोटी रोज़ी अभियान, एजेडब्ल्यूएस द्वारा इनपुट सेशन, जनता अदालत, क्रिया, एमपॉवर, सहजनी शिक्षा केन्द्र, जनसाहस, जोश, निरंतर, मिदान और जेण्डर एट वर्क समूह। इनसे लगातार जुड़े रहकर कोरोना की गम्भीर स्थिति में अपनाई जा रही सावधानियां और समुदाय में काम करने हेतु अलग–अलग रणनीतियां सीखने को मिली जिसे संस्था ने अपने क्षेत्र में क्रियान्वित किया।

ख. संस्था द्वारा क्षमता विकास–कोविड–19 को ध्यान में रखते हुये संस्था से जुड़ी कार्यकर्ताओं के साथ कई कार्यशालाएं (ऑनलाइन– ऑफलाइन) आयोजित की गई। जैसे–मानसिक स्वास्थ्य, पितृसत्ता का वंचित समुदायों पर असर, सोशल मीडिया का इस्तेमाल और फेक न्यूज़ से कैसे बचा जाए, कार्य स्थल पर महिला हिंसा, महिला हिंसा और कानून, रचनात्मक सम्प्रेष्ण करने के तरीके, घरेलू कामगार महिलाओं के मुद्दों पर इनपुट, चाइल्ड मैरिज पर इनपुट, महिला रोज़गार, जॉब एक्पोजर इनपुट, रिपोर्ट राईटिंग वर्कशॉप, जी.बी.वी मुद्दे पर इनपुट, फोटोग्राफी के नये फॉर्मेट, एडिटिंग, वीडियो पैर्टन व कलर कॉम्बिनेशन और रिपोर्ट राईटिंग के तरीके। कार्यशालाओं से मिली सीख को कार्यकर्ता संस्था के कार्यों में शामिल कर रही है।

ग. कनक्लुडिंग लैब– ग्लोबल फंड द्वारा पिछले तीन साल से चल रहे SAYWLMप्रोग्राम के तहत दो महीने का कन्क्लूडिंग लैबऑनलाइन सेशन चला। जिसमें हमारी संस्था से एक वरिष्ठ साथी ने सक्रिय रूप से भागीदारी की। यह सेशन श्रीलंका में होना था लेकिन कोविड–19 महामारी के कारण इसे जूम तकनिकी के तहत राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया गया। कन्क्लूडिंग लैब के दौरान चलाये गये सत्रों से प्रतिभागियों को सीखने–सीखाने की प्रक्रिया से जुड़ने का सुनहरा मौका मिला। जिससे वह संस्था में अन्य कार्यकताओं के साथ मेंटरशिप की भूमिका निभा रही हैं।

5. संस्थागत कार्यः

क. व्यक्तिगत रिव्यू– कोरोना महामारी को ध्यान में रखते हुये सद्भावना टस्ट ने बाहरी सन्दर्भ व्यक्ति द्वारा ऑनलाइन तरीके से कार्यकर्ताओं के साथ व्यक्तिगत रिव्यू और कार्यक्रम रिव्यू आयोजित किया। रिव्यू में संस्था के सभी कार्यकर्ता शामिल हुये। सन्दर्भ व्यक्ति द्वारा किये गये रिव्यू प्रक्रिया से हमारे काम में पहले की अपेक्षा बदलाव आया जैसे– हमारे काम की मज़बूती कहां हैं? कार्यक्रम क्या और कहां हैं? हमारा काम किस दिशा में हैं? काम मौजूदा सन्दर्भ से कैसे जुड़ता हैं? क्या हम अपने काम के ज़रिये संस्था के विज़न को पलट कर देख पा रहे है? रिव्यू के बाद सभी साथियों को नया काम दिया गया। वर्तमान में प्रत्येक कार्यकर्ता अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं।रिव्यू रिपोर्ट के आधार परटस्टीज़ द्वारा टीम का मानदेय बढ़ाते हुये उन्हें नया पद और नई ज़िम्मेदारी दी गई।

ग. यौन उत्पीड़न समिति बैठक– कार्य स्थल पर होने वाली यौन हिंसा अधिनियम 2013 के अन्तगर्त कानूनी पैरवी करने हेतु, ऑनलाइन दो बार बैठक की गई। संस्था द्वारा यौन उत्पीड़न समिति में एक नये व्यक्ति को समिति का सदस्य बनाया गया। क्योंकि समिति से जुड़े एक पुराने सदस्य ने अपने निजी कारण से समिति को छोड़ दिया। बैठक के दौरान समिति सदस्यों से सुझाव आया कि संस्था मोहल्ला मंच की लड़कियों के साथ कार्यस्थल पर होने वाली हिंसा पर अभियान करे जिससे इस मुद्दे पर व्यापक स्तर की जानकारी बढ़े। सुझाव अनुसार संस्था द्वारा टीम के साथ यौन हिंसा अधिनियम 2013 के कानून पर ओरियन्टेशन किया गया। साथ ही समुदाय की लड़कियों के बीच "कार्य स्थल पर होने वाली यौन हिंसा" के मुद्दे परऑनलाइन–ऑफलाइन जागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान के उपरान्त समुदाय में "कार्य स्थल पर होने वाली यौन हिंसा" के मुद्दे पर महिलाओं एवं लड़कियों की जानकारी बढ़ी।

घ. संस्था द्वारा नये साथियों का चयन– संस्था द्वारा रिव्यू के उपरान्त जो साथी फील्ड मोबिलाईज़र के रूप में क्षेत्र में काम कर रहे थे, उनका काम और पद बदला गया। जिनका काम संतोषजनक नही था उन्हें निष्कासन हेतु एक माह पूर्व नोटिस दिया गया। कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुये संस्था में 4 नये साथियों का चयन किया गया। एक साथी गर्ल्स प्रोग्राम संचालन करने हेतु, एक साथी महिला कार्यक्रम संचालन करने हेतु और2 लड़कियों को सोशल मीडिया कार्यक्रममें सहायक के रूप में जोड़ा गया हैं।चयन प्रक्रिया को औपचारिक रूप से करने हेतु एक दिन लड़कियों के साथ लिखित सवालों के जवाब, टाईपिंग क्षमता और FGD कराया गया। इसके उपरान्त सबकी फाईल तैयार करके बाहरी रिसोर्स पर्सन द्वारा ऑनलाइन लड़कियों का इन्टरव्यू कराया गया।

ड़.मासिक एवं साप्ताहिक बैठक–संस्था में नियमित रूप से मासिक बैठक और साप्ताहिक बैठक (ऑनलाइन– ऑफलाइन) संचालित हुआ हैं। साप्ताहिक बैठक में टीम अपने एक सप्ताह का काम और प्लान

शेयर करते हैं। और मासिक बैठक में टीम पूरे माह का काम, सीख, अनुभव, चुनौती और अगले माह में होने वाले कार्यक्रम का प्लान और रणनीतियां तैयार करते हैं।

6. कोविड–19 की स्थिति में संस्था द्वारा समुदाय में पहलः

कोविड–19 के दौरान बीते एक साल में संस्था द्वारा समुदाय में अलग– 2 तरीके से राहत और जानकारी पहुंचाने का काम किया गया है। ऐसे संकंट की स्थिति में काम करना संस्था के सभी कार्यकर्ताओं की ज़िन्दगी का पहला तजुर्बा रहा है। मुख्य तौर पर समुदाय में जो कार्य संस्था द्वारा किया गया हैं उसका संक्षेप विवरण नीचे दिया गया हैं।

क. लॉकडाउन के दौरानसमुदाय में मौजूद कार्यकर्ता और यंग लीडर्स के ज़रिये लाभार्थी को कोरोना से जुड़ी सही जानकारी और जन सुविधाओं का लाभ दिलाया गया हैं। जैसे जनधन योजना, कोटे से मिलने वाला राशन पात्र व्यक्ति को दिलवाने में मदद, उज्ज्वला गैस वितरण की सही जानकारी देना। समुदाय का स्थानीय स्टेक होल्डरों और प्रशासन से सम्पर्क कराना। और कोरोना महामारी सकंट को ध्यान में रखते हुये शासन– प्रशासन द्वारा निकाले गये आदेशों से समुदाय को अवगत कराना।

ख. कोविड–19 में हुये लॉकडाउन के दौरान लगभग 1200 जरूरत मंद परिवारों का सर्वे किया गया। जो खासकर शहरबंदी के संकंट से सबसे ज़्यादा परेशान थे। जैसे – कूड़ा और कबाड़ का काम करने वाले, घरेलू कामगार महिलाएं, भीख मांगकर अपने परिवार का पेट पालने वाले, फेरी करने वाले, दिहाड़ी मज़दूर और घर से महिलाओं द्वारा किए जाने वाले छोटे धंधे। सर्वे के उपरान्त संस्था द्वारा लगभग 750 जरूरतमंद परिवारों को राशन वितरण किया गया। बाकी 450 परिवारों को क्षेत्र के प्रभावशाली व्यक्तियों

से संपर्क करके उन्हें राशन दिलाया गया।

ग. शहरबंदी के दौरान 660 लड़कियों का सर्वे करके उनका प्रोफाइल बनाया गया। उन्ही प्रोफाइल के आधार पर संस्था द्वारा मोहल्ला मंच से जुड़ी लगभग 600 लड़कियों को सरवाइवल किट पहुंचाया गया।

घ. लखनऊ लीडर्स सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म–"लखनऊ लीडर्स" एक सोशल मीडिया पहल हैं जो सद्भावना ट्रस्ट ने लॉकडाउन के दौरान शुरू किया था। **"लखनऊ लीडर्स"** समुदाय से उभरी युवा नेत्रियों का समूह हैं जो सद्भावना ट्रस्ट के लीडरशिप बिल्डिंग प्रोग्राम से निकली हैं।सोशल मीडिया कार्यक्रम इन्ही लड़कियों के नेतृत्व में चल रहा हैं। **"लखनऊ लीडर्स"** पहल का शुरूआती कार्यक्रम था **शहरबंदी के हालात।** इस पहल का ख़ास मक़सद था, युवा महिलाओं और लड़कियों द्वारा अन्य लड़कियों और महिलाओं के लिए मटेरियर तैयार करना, और कोविड –19 को उनके नज़रिये से समझना। **शहरबंदी के हालात** सोशल मीडिया का ऐसा कार्यक्रम रहा, जिसे संस्था ने अपने ऑफलाइन कार्यक्रम से भी जोड़ा।

सोशल मीडिया कार्यक्रम के तहत अलग –2 प्लेटफॉर्म पर (फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर और यू ट्यूब चैनल) लगातार थीम के हिसाब से ऑडियो, वीडियो और फोटो के माध्यम से रूचिकर मटेरियल तैयार करके लगभग 343 पोस्ट शेयर किये गये हैं। शहरबंदी के दौरान वंचित समुदाय की युवा महिलाओं एवं लड़कियों की आवाज़ को मुख्य धारा में लाने के लिए लखनऊ लीडर्सद्वारातीन तरीके अपनाये गये। जिसका संक्षेप में विवरण प्रस्तुत हैं।

#जानकारी– पोस्टर और वीडियो के माध्यम से कोरोना से बचने की सावधानियों की जानकारी, लाभार्थी को लाभ पहुंचाने वाली ठोस जानकारी, अन्य संस्थाओं से प्रकाशित जानकारी और लगातार सरकार द्वारा निकाले जाने वाले आदेश–निर्देश की जानकारी।

#आपबीती– समुदाय से महिलाओं और लड़कियों की आपबीती की कहानियां, काम की जिम्मेदारी का बढ़ना, वॉयलेंस का शिकार, मेन्टल हेल्थ, प्रवासी मज़दूर और उनके परिवार की कहानी, शिक्षा की स्थिति, महिला रोज़गार की स्थिति, फ्रन्ट लाईन वर्कर्स की चुनौतियां और लड़कियों एवं युवा महिलाओं की ख़ास दिक्कतें।

#टाईमपास– इस थीम में ख़ास तौर पर लोगों का ध्यान टाईम पास करने के अलग–2 तरीकों पर केन्द्रित रहा हैं। जैसे– इस लॉकडाउन में युवा महिलाएं औरलड़कियां अपना वक्त कैसे काट रही हैं? इन दिनों

उन्हें क्या महसूस हो रहा है? वो टाइम पास करने के क्या –क्या तरीके अपना रही है? कार्यक्रम के तहत समुदाय की लड़कियों ने अपनी आवाज़ में टाईम पास करने के तरीक़े रिकॉर्ड करके भेजे। इस प्रक्रिया से लड़कियों की क्षमता डिजिटल मीडिया में बढ़ती हुई नज़र आईं। ओवर ऑल सोशल मीडिया का काम लोगों को पसंद आया, जिसकी वजह से **लखनऊ लीडर्स**के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर आउटरिच बढ़ा।

7. परिणामः

- नेतृत्व विकास कार्यक्रम से लड़कियों में तीन स्तर पर बदलाव देखा गया हैं जैसे–
  स्वयं स्तर पर– खुद में आत्मविश्वास पैदा हुआ, क्योंकि लिंग संबंधित मुद्दो पर उनकी जानकारी बढ़ी। वह सकारात्मक रूप से अपनी गतिशीलता बढ़ाने में सक्षम हुई।
  परिवार के स्तर पर–लड़कियों नेअपने सपनों तक पहुचने के लिएपरिवार के बीच अपनी बात रखना और उनसे निगोसिएशन करना सीखा। साथ ही परिवार के छोटे– बड़े निणर्य में बेझिझक अपना विचार रखना सीखा।
  समुदाय के स्तर पर–समुदाय के बीच उनकी बढ़ती गतिशीलता और आत्मविश्वास ने उन्हे कोविड–19 महामारी संकट के दौरान खुद को एक सक्रिय नेत्री के रूप में पहचानने का मौका दिया।उन्होने अपने समुदाय के ज़रूरतमंद व्यक्तियों की पहचान की और उन्हें राहत पहुंचाने हेतु संस्था के साथ जुड़ी।
- कार्यक्रम से उभरी लड़कियों ने कोविड–19 के दौरान राहत के रूप में दिये जाने वाले लाभ (जनधन योजना) का आंकलन करने हेतु 1000 महिलाओं का सर्वे किया।
- फोटोग्राफी प्रतियोगिता में एक लड़की जो नेतृत्व विकास कार्यक्रम से जुड़ी थी, वह प्रथम विजेता बनी। उन्होने कार्यक्रम के दौरान फोटोग्राफी सीखा था, उसी सीख को उन्होंने फोटोग्राफी प्रतियोगिता में लागू किया।

- समुदाय से उभरी नेत्रियां कार्यकर्ता के रूप में संस्था से जुड़ी है, और वह समुदाय में सुगमकर्ता के रूप में काम कर रही हैं।
- समुदाय के बीच हमारे आउटरिच में वृद्धि हुई है, जिसने आस–पास के मोहल्ला मंचों से जुड़ी लड़कियों को प्रभावित किया है। जिससे वह लगातार मोहल्ला मंच से जुड़ रही हैं।
- महिला हिंसा के मुद्दे को देखते हुए यह कार्य एक जोखिम उठाने वाला कार्य है, इसके बावजूद कार्यकर्ताओं का महिला हिंसा के मुद्दे पर कानूनी क्षमता का विकास हुआ हैं, जिससे वर्तमान में वह महिला हिंसा के केसों में ठोस प्रक्रिया के साथ पैरवी करने में सक्षम हो पा रही हैं।
- समुदाय से उभरी नेत्रियों की जेण्डर –भेदभाव, यौनिकता, पितृसत्ता जैसे मुद्दों पर समझ बनी हैं।
- टीम द्वारा लॉकडाउन के दौरान भी समुदाय के केसो में पैरवी की गई।
- अभियान कार्यक्रम में लड़कों और मर्दो की सहभागिता हुई, जिससे उन्हें उनके दक़ियानुसी सोच पर पुनः विचार करने का मौका मिला।
- लॉकडाउन के दौरान लगभग 750 जरूरत मंद परिवारों तक राहत सामग्री पहुचाकर उन्हें सहयोग किया गया।
- लड़कियों के साथ एफ0जी0डी0 के बाद लगभग 600 लड़कियों और युवा महिलाओं को सरवाइवल किट दिया गया। जिससे वह अपने स्वास्थ्य और सफाई का ध्यान रख पाईं।
- समुदाय मंच की लीडर्स के साथ संचालित जूम सेशन में लगभग 70 लड़कियों ने भाग लिया। जिससे वह कोविड–19 के दौरान उभरे मुद्दों पर समझ बना पाईं।

8. उपलब्धियां:

- संस्था द्वारा संचालित की गई

(ऑनलाइन– ऑफलाइन) अलग–2 गतिविधियों के माध्यम से समुदाय स्तर पर संस्था और समुदाय से उभरी युवा नेत्रियों की पहुंच और पहचान बढ़ी हैं। जिससे अन्य मंचों की लड़कियां प्रेरित हुई हैं, इसलिए उनका जुड़ाव मंचों के साथ मज़बूत और निरंतर बना हुआ हैं।

- लड़कियां स्वयं के स्तर पर, परिवार के स्तर पर और समुदाय स्तर पर अपनी बात कहने और निणर्य लेने में सक्षम हुई हैं।
- सेन्टर द्वारा **नेतृत्व विकास कार्यक्रम** से (दो क्षेत्रों में संचालित जॉब स्किल्स कोर्स) जुड़ी 50 लड़कियों में 23 लड़कियों ने नौकरी/रोज़गार तक सीधे पहुंच बनाई हैं। और वह मौजूदा स्थिति में अपने परिवार की आजीविका चलाने में सहयोग दे रही है।
- कोविड–19 में लगभग 750 जरूरत मंद परिवार को राहत सामग्री और 600 लड़कियों को सरवाइवल किट पहुंचाकर, संस्था उनके संघर्ष में साथ खड़ी हो पाई हैं।
- संस्था के काम का दायरा बढ़ा, वर्तमान में 50 बस्तियों में किशोरियों और महिलाओं के साथ काम चल रहा हैं।
- कोविड–19 में भी लगातार लड़कियों के साथ ऑनलाइन– ऑफलाइन सेशन के ज़रिये जुड़ाव बना रहा।
- संस्था का सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म अपने कार्यक्रम की पहचान के साथ सक्रिय हुआ हैं। और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर **लखनऊ लीडर्स** के नाम से स्थापित हुआ।
- संस्था के दो साथियों को **चेन फॉर चेंज सोसाइटीलखनऊ** की तरफ से विमेन अचिवर्स अवार्ड दे कर सम्मानित किया गया।

9. चुनौतियां और रास्तेः

कोविड–19 महामारी का असर– पूरी दुनिया को प्रभावित करने वाला कोरोना वायरस जिसने लोगों को पूरी तरह से असहाय बना दिया। अचानक शहर में तालाबंदी हो गई, जिसके प्रभाव से समुदाय में संचालित सभी गतिविधियां रूक गई। तालाबंदी का असर सबसे ज़्यादा गरीब और वंचित समुदाय को झेलना पड़ा। संस्था द्वारा संचालित नज़रिया सेन्टर को बंद करना पड़ा, क्षेत्र और सेन्टर के लिए हमने जो रणनीति बनाई थी वह रणनीतियां बदलनी पड़ी। तालाबंदी ने हमें व्यक्तिगत रूप से हताश और परेशान किया। जैसे–जैसे तालाबंदी का दिन बढ़ता गया वैसे–वैसे समुदाय में संकट की वृद्धि होती गई। हमने लोगों की आजीविका खोते देखा, लिंग आधारित हिंसा बढ़ते देखा, लड़कियों की ज़बरदस्ती शादी कराई गई और स्कूलों में ड्रॉपआउट होने की संख्या में वृद्धि हुई।

शहर का माहौल देखते हुये संस्था ने अपने कार्यक्रम की रणनीतियों में बदलाव किया, और लड़कियों के साथ ऑनलाइन कार्यक्रम को संचालित करने की योजना बनाई। संस्था ज़्यादातर लड़कियों को नियमित रूप से सत्रों में शामिल कर पाईं। लेकिन उस दौरान डिजिटल चुनौतियां भी हमारे सामने ज़बरदस्त थी। कोविड–19 महामारी के नियम और सावधानियों को ध्यान में रखते हुये संस्था ने लड़कियों के साथ चर्चा जारी रखा। उन्हें वाट्स्एप्प और कॉनफ्रेन्स के माध्यम से संचालित सत्रों में शामिल किया गया। कोविड–19 महामारी के दौरान उभरे व्यक्तिगत दिक्कतों को समझने के लिए 660 लड़कियों के साथ वन टू वन सर्वे किया गया, जिसका सामना उन्होंने महामारी के दौरान किया था। उभरे मुद्दों पर गहरी समझ बनाने एवं निपटने के लिए छोटे–छोटे समूहों में (142 लड़कियों के साथ) चर्चा किया गया। चर्चित मुद्दे रहे शिक्षा, आय से संबंधित नुकसान, घरेलू हिंसा में वृद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य।

GBV संबंधित चुनौतियां– महामारी के दौरान हुये तालाबंदी से युवा महिलाओं और लड़कियों को घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ा। क्षेत्रों में सार्वजनिक और निजी स्थानों पर हो रही हिंसा की घटनाओं में वृद्धि हुई। हमने यह भी देखा कि सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से डिजिटल स्थानों में उत्पीड़न हुआ हैं जिसका सामना समुदाय की महिलाओं और लड़कियों ने किया। जिसकी वजह से उनके परिवार द्वारा फोन और इन्टरनेट इस्तेमाल पर नियंत्रण किया जाने लगा और कभी –2 तो उन्हे गतिशीलता संबंधी पाबंदी पर शारीरिक हिंसा का सामना भी करना पड़ा हैं।

संस्था ने उपरोक्त मुद्दों को संबोधित करते हुये महिलाओं एवं लड़कियों को कानूनी और सामाजिक समर्थन दिया। लड़कियों को जागरूक करने के लिए डिजिटल हिंसा पर ऑनलाइन सत्र आयोजित किया। साथ ही शारीरिक हिंसा और मानसिक हिंसा को प्राथमिकता देते हुये मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े विशेषज्ञ से सत्रों का संचालन कराया गया।

जन धन योजना सर्वे– सर्वे के दौरान सबसे बड़ी चुनौती यह रही कि समुदाय के लोगों में बहुत ही दहशत का माहौल था, उन्हें लग रहा था कि हम उनसे क्या जानकारी ले रहे हैं कही उनकी पहचान को लेकर कोई दिक्कत न हो जायें। इस तरह संस्था को सर्वे करने में समुदाय की तरफ से कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

संस्था की रणनीति ये थी कि जिस मोहल्ले में टीम सर्वे कर रही थी, उसी मोहल्ले के प्रभावशाली व्यक्तियों और उस मोहल्ले के लीडर्स के सहयोग से सर्वे का काम पूरा किया गया। जिसमें समुदाय के लीडर्स ने

क्षेत्र के प्रत्येक घरों में जाकर सर्वे किया और लोगों को विश्वास दिलाया कि हम उनके फायदे के लिए ये सर्वे कर रहे हैं, ताकि हम सर्वे से निकले नतीजों पर सरकार के साथ पैरवी कर पायें। जिससे समुदाय को सरकारी योजनाओं का लाभ व अधिकार मिल सके।

10. सीखः

- कार्यक्रम को संचालित रखने के लिए ऑनलाइन प्रक्रिया चलाना हमारे लिए काफी नया और दिलचस्प रहा हैं, जिसे हम हर कार्य क्षेत्र में अपना रहे हैं और आगे अपनाने की दिशा में सोच रहे हैं।
- ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के लिए मटेरियल तैयार करना और समुदाय को जोड़े रखना।
- ऑनलाइन सत्रों का संचालन करने के लिए हमारी टीम व्यक्तिगत रूप से सक्षम हो पाई हैं।
- कोविड–19 के दौरान हम महिला हिंसा और मानसिक स्वास्थ्य के बीच का रिश्ता समझ पायें, जिसे हम आगे होने वाले कार्यक्रम में शामिल करेंगे।
- जूम सेशन के ज़रिये हम कई नेशनल और इन्टरनेशनल ग्रुप से जुड़ पायें और देश की व्यापक स्थिति को समझ पायें।
- लीडरशिप सेन्टर के ज़रिये हम लड़कियों की ज़रूरतों को समझते हुये उन्हें प्रशिक्षित कर पायें।
- जूम वेबिनार के ज़रिये राष्ट्रीय स्तर के अलग– अलग मुद्दों से जुड़े संघर्षों के अनुभव के बारे में जान पायें।
- टीम स्वयं के अंदर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को टूल के रूप में इस्तेमाल करने का कौशल बढ़ाते हुये डिजिटल तकनिकी में अपनी क्षमता मज़बूत कर पाईं।

11. सहयोगी संस्थाः

- एजेडब्ल्यूएस
- एमपॉवर
- ग्लोबल फंड फॉर विमेन
- मिदान
- क्रिया
- निरंतर
- प्वाइंट ऑफ व्यू
- इम्पॉवरिंग विज़न
- आज़ादी फॉउन्डेशन
- टी.सी.एस
- इनलिंगुआ
- हमसफ़र

12.सोशल मीडिया लिंक:

- Website:- http://sadbhavanatrust.org.in
- Facebook:https://www.facebook.com/sadbhavanatrust.lucknow
- Instagram: https://www.instagram.com/sadbhavanalko12/
- Twitter: https://twitter.com/home
- **YouTube**:https://www.youtube.com/channel/UCm3ckMeo-d6bj2FfNnO6tPw
- Blog: https://lucknowleaders.wordpress.com